

चालीसवें पद का गुप्त इतिहास - संख्या सोलह

दूसरा हाय — भाग तीन

Jeff Pippenger

2026-06-18

जोन्स का तर्क

जोन्स का यह तर्क कि प्रकाशितवाक्य चौदह का पहला स्वर्गदूत उसके बाद आने वाले दो स्वर्गदूतों से पृथक नहीं किया जा सकता, चट्टान के समान दृढ़ है। उन तीन स्वर्गदूतों के संरचनात्मक संबंध को तुरही बजाने वाले स्वर्गदूतों के साथ उसकी पहचान सर्वथा अभेद्य है। निस्संदेह उसका विशेष बल प्रकाशितवाक्य चौदह के उन तीन स्वर्गदूतों पर था, परंतु उन्हें “अविभाज्य” के रूप में लागू करने का तर्क उनसे पहले आए सभी स्वर्गदूतों पर भी उतना ही वैध है।

क्योंकि वह प्रकाशितवाक्य चौदह के तीन स्वर्गदूतों पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, इसलिए उसने अपने ही तर्क को उसके अंतिम निष्कर्ष तक नहीं पहुँचाया। अंततः जिस तर्क का उसने उपयोग पाँचवीं, छठी और सातवीं हाय की तुरहियों को प्रकाशितवाक्य चौदह के तीन स्वर्गदूतों से जोड़ने के लिए किया, उसमें तुरहियों की श्रेणी को सात तुरही बजाने वाले स्वर्गदूतों में से प्रथम तक पूरी तरह पीछे ले जाना भी सम्मिलित था।

और मैंने उन सात स्वर्गदूतों को देखा, जो परमेश्वर के सम्मुख खड़े थे; और उन्हें सात तुरहियाँ दी गईं। ... और वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास वे सात तुरहियाँ थीं, फूँकने के लिए तैयार हुए। प्रकाशितवाक्य 8:2, 6.

स्वर्गदूतों की श्रृंखला “सात” तुरही बजाने वाले स्वर्गदूतों से आरम्भ होती है, और प्रकाशितवाक्य में स्वर्गदूतों की पंक्ति पहली तुरही से लेकर पशु की छाप के विषय में तीसरे स्वर्गदूत की चेतावनी तक जाती है। पहली चार तुरहियों और अन्तिम तीन हाय की तुरहियों के बीच भेद को पहचानने में जोन्स सही हैं, क्योंकि “चार और तीन” की वह भविष्यसूचक संरचना कलीसियाओं और मुहरों में भी पाई जाती है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में तीन गवाहों पर स्थापित यह बात उन लोगों को, जो देखना चुनते हैं, यह समझने देती है कि सात, एक प्रतीक के रूप में, चार को भी एक प्रतीक के रूप में और तीन को भी एक प्रतीक के रूप में समाहित करता है।

एक दैवीय संबंध

हाल के समय में हम जिस बात की पहचान करते आए हैं, वह यह है कि प्रकाशितवाक्य चौदह के प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूत इस्लाम से संबंधित प्रथम और द्वितीय हाय की एक समय-भविष्यवाणी द्वारा सामर्थ्य प्राप्त करते हैं, और तृतीय स्वर्गदूत का सामर्थ्य-प्रदान 9/11 को तृतीय हाय की पूर्ति के द्वारा सम्पन्न होता है। जो बात जोन्स के अनुप्रयोग से पहचानी जाती है, (यद्यपि उसने मेरा बिंदु नहीं रखा) वह यह है कि प्रकाशितवाक्य आठ के प्रथम तुरही-स्वर्गदूत से लेकर प्रकाशितवाक्य ग्यारह की तृतीय हाय की तुरही तक प्रत्येक स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य चौदह के तीनों स्वर्गदूतों के साथ अविच्छेद्य रूप से जुड़ा हुआ है। वे उसी भविष्यवाणी-रेखा के भीतर प्रतीक हैं। प्रत्येक स्वर्गदूत जिन विभिन्न भूमिकाओं का प्रतिनिधित्व करता है, उन्हें समझने के लिए उन्हें इसी प्रकार पहचानना आवश्यक है। इसलिए, जिस प्रकार सात कलीसियाएँ, मुहरें और तुरहियाँ सात का प्रतिनिधित्व करती हैं, और साथ ही सात की समग्र प्रतीकात्मकता (कलीसियाओं, मुहरों और तुरहियों) के भीतर चार और तीन के प्रतीक को भी; उसी प्रकार सात तुरही-स्वर्गदूतों में से प्रथम से लेकर तृतीय स्वर्गदूत तक की स्वर्गदूतों की रेखा को एक समग्र इकाई के रूप में माना जाना चाहिए। इससे ग्यारह स्वर्गदूतों की एक रेखा की पहचान होती है।

प्रकाशितवाक्य चौदह के तीन स्वर्गदूत मिलेराइटों के उस चेतावनी-संदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने न्याय के आरंभ की घोषणा की, और उसके पश्चात् एक लाख चवालीस हजार के उस चेतावनी-संदेश का, जो न्याय के समापन की घोषणा कर रहा है।

सात तुरहियाँ उन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी दैवी व्यवस्था के अनुसार उन राष्ट्रों पर न्याय लाने के लिए प्रयोग किया, जिन्होंने सूर्य-पूजा को लागू किया था।

पहली चार तुरहियाँ सन् 427 तक पश्चिमी रोम के क्रमिक पतन की पहचान कराती हैं।

पाँचवाँ और छठा 1449 से 1453 तक पूर्वी रोम के पतन को चिह्नित करते हैं।

अन्तिम तीन नरसिंगे तीन हायों के इस्लाम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रकाशितवाक्य दस का स्वर्गदूत मसीह है, जो आरंभ में उस आंदोलन को सामर्थ्य प्रदान करने के लिए उतरता है, और वही प्रकाशितवाक्य अठारह में फिर उतरता है, ताकि अंत में उस आंदोलन को सामर्थ्य प्रदान करे।

प्रायश्चित्त के प्रतिरूपात्मक दिन ठहरने वाले न्याय के आरम्भ पर, 22 अक्टूबर 1844 को सातवीं तुरही बजनी आरम्भ हुई। जुबली की तुरही प्रायश्चित्त के दिन बजाई जानी थी। इसलिए न्याय के समय दो तुरहियाँ बजाई जाती हैं: जुबली की तुरही और सातवीं तुरही।

तब तू सातवें महीने के दसवें दिन, अर्थात् प्रायश्चित्त के दिन, जुबली का नरसिंगा फुंकवाना; तुम अपने सारे देश में नरसिंगा फुंकवाना। और तुम पचासवें वर्ष को पवित्र ठहराना, और उसके सब निवासियों के लिए सारे देश में स्वतंत्रता का प्रचार करना; वह तुम्हारे लिए जुबली होगा; और तुम में से प्रत्येक मनुष्य अपनी निज भूमि में लौटे, और तुम में से प्रत्येक मनुष्य अपने कुल में लौटे। वह पचासवाँ वर्ष तुम्हारे लिए जुबली होगा; उसमें न तो बोना, और न जो अपने आप उग आए उसे काटना, और न अपनी बिना छँटी हुई दाखलता के अंगूर बटोरना।
लैव्यव्यवस्था 25:9-11।

लैव्यव्यवस्था के ठीक अगले अध्याय में स्थित वह संदर्भ, जो “सात कालों” के लिए इस्राएल के तितर-बितर किए जाने की पहचान करता है, उन पदों में प्रस्तुत किया गया है जो प्रायश्चित्त के दिन जुबली के नरसिंगे को फूँकने की आज्ञा तक ले जाते हैं।

इस्राएल की सन्तानों से कह, और उनसे कह, जब तुम उस देश में पहुँचो, जो मैं तुम्हें देता हूँ, तब वह देश यहोवा के लिये विश्राम-दिन माने। छह वर्ष तक तू अपने खेत में बोआई करना, और छह वर्ष तक तू अपनी दाखलता की छँटाई करना, और उसकी उपज इकट्ठी करना; परन्तु सातवें वर्ष देश के लिये पूर्ण विश्राम का विश्राम-दिन होगा, यहोवा के लिये विश्राम-दिन; तू न अपने खेत में बोआई करना और न अपनी दाखलता की छँटाई करना। तेरी कटनी में से जो आप ही उग आए, उसे न काटना, और अपनी अनछँटी दाखलता के अंगूर न बटोरना; क्योंकि यह देश के लिये विश्राम का वर्ष है। और देश का यह विश्राम तुम्हारे लिये भोजन ठहरेगा; तेरे लिये, और तेरे दास के लिये, और तेरी दासी के लिये, और तेरे मजदूर के लिये, और तेरे यहाँ परदेशी होकर रहने वाले के लिये, और तेरे पशुओं के लिये, और उस देश में रहने वाले वन-पशुओं के लिये भी उसकी सारी उपज भोजन ठहरेगी। और तू अपने लिये वर्षों के सात विश्राम-दिन गिनना, अर्थात् सात बार सात वर्ष; और वर्षों के उन सात विश्राम-दिनों का समय तेरे लिये उनचास वर्ष होगा। लैव्यव्यवस्था 25:2-8।

जब मिलर ने अध्याय छब्बीस में भूमि के लिए ठहराए गए सब-विश्राम को भंग करने के कारण इस्राएल पर आए न्याय को पहचाना, तब उसने इस सिद्धांत को लागू किया कि एक दिन एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करता है, और यह खोजा कि एक वर्ष तीन सौ साठ दिनों का होता है, और सात गुना तीन सौ साठ, वाचा को तोड़ने के लिए दंड के रूप में दो हजार पाँच सौ बीस वर्ष हुए। यही वह पहली भविष्यद्वाणी-संबंधी सच्चाई थी जिसे उसने खोजा। यह उन सच्चाइयों की नींव है, जो उस नींव का भाग बनीं जिसे मसीह ने मिलर के कार्य के द्वारा रखा। जुबली की तुरही छुटकारे और स्वतंत्रता की घोषणा है।

सातवीं तुरही तीसरे हाय का इस्लाम है।

परन्तु सातवें स्वर्गदूत के शब्द के दिनों में, जब वह तुरही फूँकना आरम्भ करेगा, तब परमेश्वर का भेद पूरा हो जाएगा, जैसा उसने अपने दासों, भविष्यद्वक्ताओं, को घोषित किया है। प्रकाशितवाक्य 10:7.

इस्लाम की सातवीं तुरही एक बाह्य भविष्यवाणी-संबंधी सत्य है, और जुबली की तुरही विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की आंतरिक भविष्यवाणी-संबंधी सच्चाई है—पाप से छुटकारा, जो सिस्टर व्हाइट के अनुसार वास्तव में तीसरा स्वर्गदूत है। उस अवधि में जब सातवीं तुरही फूँकी जा रही होती है, “मसीह तुम में, महिमा की आशा” का भेद पूर्ण किया जाएगा, क्योंकि मसीह अपनी दिव्यता को एक लाख चवालीस हजार की मनुष्यता के साथ संयुक्त करता है। जो उस समय परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे, वे चेतावनी का एक तुरही-संदेश घोषित करेंगे, जिसे तीसरे हाथ के रूप में तथा तीसरे स्वर्गदूत की चेतावनी के रूप में भी निरूपित किया गया है। तीसरा हाथ तीसरे स्वर्गदूत के संदेश को सामर्थ्य प्रदान करता है, जब वह स्वर्गदूत, जो स्वयं यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व नहीं है, अपने हाथ में एक संदेश लेकर उतरता है।

जब हम यह पहचानते हैं कि प्रथम और द्वितीय हाथ की एक समय-भविष्यवाणी ने पहले स्वर्गदूत के संदेश को सामर्थ्य प्रदान किया, और तृतीय हाथ की एक भविष्यवाणी तृतीय स्वर्गदूत के संदेश को सामर्थ्य प्रदान करती है, तब हम तुरहियों की पहचान उन ‘न्यायिक दण्डों’ के रूप में कर रहे होते हैं जो रविवार-पालन के प्रवर्तन के प्रत्युत्तर में रोम पर लाए गए थे। वे दैवी विधान द्वारा लाए गए न्यायिक दण्ड, विशेषकर अंतिम तीन हाथ-तुरहियाँ, प्रकाशितवाक्य चौदह के तीन स्वर्गदूतों की चेतावनी-संदेश के साथ संगत हैं और उसके समानान्तर चलते हैं। मिलरवादी इतिहास में दो हाथ और दो स्वर्गदूत, तथा एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में तृतीय हाथ और तृतीय स्वर्गदूत। प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के आरम्भिक इतिहास में न्याय के आरम्भ के संदेश को प्रथम और द्वितीय हाथ के इस्लाम की एक परिपूर्ति द्वारा सामर्थ्य प्रदान किया गया। तृतीय स्वर्गदूत के अंतिम इतिहास में न्याय के समापन की घोषणा करने वाले संदेश को तृतीय हाथ के इस्लाम की एक परिपूर्ति द्वारा सामर्थ्य प्रदान किया गया।

आरंभ और अंत में जो सामर्थ्य प्रदान की गई थी, उसका प्रतीक प्रकाशितवाक्य दस और अठारह के उस स्वर्गदूत द्वारा किया गया था, “जो स्वयं यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व न था।” इस्लाम का बाह्य संदेश और न्याय का आंतरिक संदेश—बाह्य रूप में तीसरी हाथ की तुरही है, और न्याय का आंतरिक संदेश तीसरे स्वर्गदूत की तुरही है। इस्लाम की बाह्य तुरही पच्चीस सौ बीस वर्षों की भविष्यवाणी है, और तीसरे स्वर्गदूत की आंतरिक तुरही तेईस सौ वर्षों की है। दोनों मृतकों के न्याय के आरंभ पर पहुँचीं और बज उठीं, और दोनों फिर से जीवितों के न्याय के आरंभ पर भी पहुँचीं।

प्रकाशितवाक्य दस का स्वर्गदूत 11 अगस्त, 1840 को इस्लाम की भविष्यवाणी की पूर्ति में उतरा, और ऐसा करते हुए उस स्वर्गदूत ने इस्लाम की एक भविष्यवाणी की पूर्ति के साथ प्रकाशितवाक्य अठारह के स्वर्गदूत के अवतरण का प्रतिरूप प्रस्तुत किया। 321 में संडे-लॉ के विद्रोह पर, और फिर 538 में, परमेश्वर का न्याय पहली छह तुरहियों के द्वारा निरूपित किया गया है, और शीघ्र आने वाले संडे-लॉ विद्रोह के लिए उसका न्याय सातवीं तुरही के द्वारा निरूपित किया गया है, जो तीसरा हाथ है और साथ ही तीसरा स्वर्गदूत भी है। 22 अक्टूबर, 1844 को न्याय के आरंभ की चेतावनी का संदेश और 9/11 को जीवितों के न्याय की चेतावनी का संदेश—दोनों ही उस क्रम में सातवें स्वर्गदूत के द्वारा सामर्थ्य प्रदान किए गए थे, जिसे जोन्स ने प्रस्तुत किया। आठवें और नौवें अध्यायों में छह तुरही-दूत हैं, फिर दसवें अध्याय में वह स्वर्गदूत उतरता है जो यीशु मसीह से कम किसी व्यक्तित्व का नहीं है। वह स्वर्गदूतों के क्रम में सातवाँ है, जिसके पश्चात् ग्यारहवें अध्याय में तीसरा हाथ आता है, जो सातवीं तुरही है, जिसका बजना 1844 में आरंभ हुआ, परन्तु वह स्वर्गदूतों की उस श्रृंखला में आठवाँ है जो प्रकाशितवाक्य चौदह के नौवें, दसवें और ग्यारहवें स्वर्गदूतों तक ले जाती है।

तीसरे स्वर्गदूत का संदेश पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेशों से पृथक नहीं किया जा सकता, परन्तु इसे धर्मत्याग पर परमेश्वर के न्याय की सात तुरहियों से भी अलग नहीं किया जा सकता। प्रकाशितवाक्य के आठवें अध्याय में न्याय की पहली चार तुरहियाँ, 321 में कॉन्स्टैन्टीन के प्रथम रविवार-विधि के पश्चात् पश्चिमी रोम के क्रमिक पतन की पहचान कराती हैं, और उनका आरम्भ 330 में उसके द्वारा साम्राज्य के पूर्व और पश्चिम में विभाजन से हुआ।

“जब हमारा राष्ट्र अपनी विधायी परिषदों में मनुष्यों के विवेक को उनके धार्मिक अधिकारों के संबंध में बाँधने के लिए ऐसे कानून बनाएगा, रविवार-पालन को लागू करेगा, और सातवें दिन के सब्त को मानने वालों के विरुद्ध दमनकारी शक्ति का प्रयोग करेगा, तब परमेश्वर की व्यवस्था हमारे देश में, वस्तुतः और प्रभाव की दृष्टि से, शून्य कर दी जाएगी; और राष्ट्रीय धर्मत्याग के पश्चात् राष्ट्रीय विनाश आएगा।” Review and Herald, December 18, 1888.

राष्ट्रीय धर्मत्याग से राष्ट्रीय विनाश आने का सिद्धांत कॉन्स्टैन्टाइन के राष्ट्र पर उन प्रथम चार तुरहियों के साथ लागू हुआ, जिन्होंने 476 तक पश्चिमी रोम का समापन कर दिया। पूर्वी रोम 1453 में अपने निष्कर्ष पर पहुँचा, यद्यपि भविष्यवाणी की दृष्टि से उसने 27 जुलाई, 1449 को ही अपनी राष्ट्रीय प्रभुसत्ता खो दी थी। बाबुल के विपरीत, जो एक ही रात में पराजित कर दिया गया था, रोम—पश्चिमी और पूर्वी दोनों—क्रमिक रूप से अपने अंत तक पहुँचाया गया। 476 तक प्रथम चार तुरहियों के अधीन पश्चिमी रोम का पतन, चार तुरहियों के अधीन संयुक्त राज्य अमेरिका के पतन का प्रतिनिधित्व करता है, जो एक स्तर पर संयुक्त राज्य अमेरिका की उन चार पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनका आरम्भ 1798 में हुआ और जो रविवार-विधि पर समाप्त होती हैं। वे चार पीढ़ियाँ एडवेंटिज़्म की चार पीढ़ियों के समांतर हैं, जो प्रकाशितवाक्य दो की प्रथम चार कलीसियाओं के समांतर हैं, और यहजेकल अध्याय आठ की क्रमशः बढ़ती हुई चार घृणित बातों तथा योएल की पुस्तक में टिड्डियों की चार लहरों के भी समांतर हैं।

क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है: जब मैं यरूशलेम पर अपने चार भयंकर न्याय, अर्थात् तलवार, और अकाल, और दुष्ट हिंसक पशु, और महामारी भेजूँगा, ताकि उसमें से मनुष्य और पशु दोनों का नाश कर दूँ, तब वह कितना अधिक होगा! यहजेकल 14:21.

पाँचवीं और छठी तुरहियों ने पूर्वी रोम को गिरा दिया, और पश्चिमी रोम के साथ अपनी भविष्यवाणीगत संबंधता में पूर्वी रोम राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। पश्चिमी रोम कलीसिया का प्रतिनिधित्व करता है। पश्चिमी रोम संयुक्त राज्य अमेरिका का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो पहले पराजित किया जाता है, जैसा कि पश्चिमी रोम हुआ था।

“जब अमेरिका, जो धार्मिक स्वतंत्रता का देश है, अंतरात्मा पर बल प्रयोग करने और मनुष्यों को झूठे सब्त का आदर करने के लिए बाध्य करने में पोपसत्ता के साथ एक हो जाएगा, तब समस्त पृथ्वी के प्रत्येक देश के लोग उसके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किए जाएँगे।” Testimonies, volume 6, 18.

पहली चार तुरहियाँ अमेरिकी इतिहास की चार पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, और जब संयुक्त राज्य गिरता है, तब दानिय्येल ग्यारह के इकतालीसवें पद का महिमामय देश अभी-अभी गिरा होता है, और अगली बाधा मिस्र है, जो संसार की शेष जातियों का प्रतीक है। तब संयुक्त राष्ट्र, जो दस राजा हैं, प्रकाशितवाक्य सत्रह में ‘थोड़े समय—एक घंटे’ के लिए अपना सातवाँ राज्य पोपसत्ता को देने पर सहमत होते हैं। यह हेरोदेस के जन्मदिन के भोज में घटित होता है, जब वह अपने राज्य का आधा भाग देने की प्रतिज्ञा करता है। हेरोदेस के जन्मदिन के भोज में, उसी घड़ी दीवारों के पलस्तर पर लिखा हुआ प्रकट होता है, और बेलशस्सर मार डाला जाता है। वह घड़ी रविवार-विधि के समय आती है और मनुष्य की कृपाकाल की समाप्ति तक बनी रहती है। सातवें राज्य पर वैसा ही विजय प्राप्त की जाती है जैसा 1453 में कॉन्स्टैन्टिनोपल की दीवारों के ध्वंस द्वारा प्रतिरूपित हुआ था। संयुक्त राज्य में रविवार-विधि से, जैसा कि 1449 द्वारा प्रतिरूपित है, लेकर 1453 में कॉन्स्टैन्टिनोपल के पतन तक, चार प्रतीकात्मक वर्ष होते हैं। पोपसत्ता ने 1798 में अपना घातक घाव प्राप्त किया।

दानिय्येल 11:40 में पोपतंत्र 1798 में, अर्थात् अन्त के समय, गिर पड़ा। फिर दक्षिण का राजा 1989 में, अर्थात् अन्त के समय, गिर पड़ा। संयुक्त राज्य अमेरिका पद 41 में गिरता है, और मिस्र पद 42 में गिरता है, और पोपतंत्र पद 45 में अपने दूसरे और अन्तिम पतन को पहुँचता है।

“दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों में जिस प्रकार राष्ट्रों के उत्थान और पतन को स्पष्ट किया गया है, उससे हमें यह सीखना चाहिए कि केवल बाहरी और सांसारिक वैभव कितना निरर्थक है। बाबुल, अपने समस्त सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ—जिसके समान हमारे संसार ने फिर कभी नहीं देखा—वह सामर्थ्य और ऐश्वर्य जो

उस समय के लोगों को इतना स्थिर और स्थायी प्रतीत होता था—कैसे पूर्णतः लुप्त हो गया! 'घास के फूल' के समान वह नष्ट हो गया। याकूब 1:10। इसी प्रकार मादी-फारसी राज्य, और यूनान तथा रोम के राज्य भी नष्ट हो गए। और इसी प्रकार वह सब कुछ नष्ट हो जाता है जिसका आधार परमेश्वर नहीं है। केवल वही स्थिर रह सकता है जो उसके उद्देश्य से बंधा हुआ हो और उसके चरित्र को प्रकट करता हो। उसके सिद्धांत ही एकमात्र अटल वस्तुएँ हैं जिन्हें हमारा संसार जानता है।" भविष्यद्वक्ता और राजा, 548.

इकतालीसवें पद में संयुक्त राज्य अमेरिका (झूठा भविष्यद्वक्ता) का पतन 1449 द्वारा प्रतिरूपित किया गया था, और बयालीसवें पद में मिस्र (अजगर) का पतन 1453 द्वारा प्रतिरूपित किया गया था; और 1798 द्वारा प्रतिरूपित के अनुसार पोपसत्ता (पशु) बिना किसी सहायक के अपने अंत को पहुँचती है। झूठा भविष्यद्वक्ता और अजगर तुरही-शक्तियों द्वारा गिराए जाते हैं, और पशु को एक अजगर-शक्ति द्वारा गिराया जाता है।

संख्या चार किसी राज्य के विघटन का प्रतीक है। सिकंदर का राज्य टूटकर चार राज्यों में बिखर गया, और मिस्र चौथी पीढ़ी में लाल समुद्र में डूब गया, और इस्राएल यहजेकेल आठ की चौथी घृणित बात में सूर्य को प्रणाम कर रहा है। पृथ्वी के उस पशु में प्रोटेस्टेंटवाद और रिपब्लिकनवाद की चार पीढ़ियाँ 1798 में आरम्भ हुईं और दोनों सींगों के लिए शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर समाप्त होती हैं। यहजेकेल के यरूशलेम पर चार घोर दंड संयुक्त राज्य अमेरिका पर आने वाले चार दंडों को चित्रित करते हैं, और बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य पर वे चार दंड 1449 से 1453 तक के उन चार वर्षों का प्रतिरूप हैं, जब बाइबल की भविष्यवाणी का सातवाँ राज्य पोपसत्ता को अपनी आधी राज्यसत्ता देने के लिए सहमत होता है, उस कलीसिया-और-राज्य संबंध में जिस पर सूर की वेश्या राज्य करती है।

1449 से 1453 तक के चार वर्ष रविवार-विधि के समय सातवें राज्य के पतन का प्रतिनिधित्व करते हैं, और वे रविवार-विधि से लेकर अनुग्रह-अवधि के समाप्त होने तक आठवें राज्य के पतन की अवधि का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। मिस्र की विजय, जो संसार है और वह अजगर भी है जो पोपसत्ता को दिया गया है, 1449 से 1453 तक के चार वर्षों द्वारा प्रतीकित अवधि के आरम्भ में एक फ्रैक्टल है। यह रविवार-विधि के समय कॉन्स्टैन्टिनोपल के पतन की पहचान कराता है, और फिर पुनः तब, जब मीकाएल खड़ा होता है। जब मीकाएल खड़ा होता है, तब प्रेरित वचन के अनुसार चारों स्वर्गदूत पूर्णतः मुक्त कर दिए जाते हैं।

"मैंने देखा कि वे चार स्वर्गदूत चारों वायुओं को तब तक रोके रखेंगे, जब तक पवित्रस्थान में यीशु का कार्य पूरा न हो जाए; और तब अन्तिम सात विपत्तियाँ आएँगी।" Early Writings, 36.

सिकंदर के राज्य के चार भाग; पश्चिमी रोम पर चार तुरहियाँ; पूर्वी रोम पर छोड़ी गई चार वायु; यरूशलेम पर चार घोर दंड; और जब पोपतंत्र अपने अंत को पहुँचता है और सहायता करनेवाला कोई नहीं होता, तब छोड़ी गई चार वायु। इन भविष्यद्वक्ता-संबंधी प्रतीकों को प्रस्तुत कर हम दूसरे हाथ पर विचार करेंगे, उसे शीघ्र आनेवाले रविवार के विधि-नियम के संदर्भ में लागू करते हुए।

फ्लोरेंस की परिषद

1439 में, फ्लोरेंस की परिषद (जिसे फ्लोरेंस का संघ भी कहा जाता है) में, पूर्वी रूढ़िवादी कलीसिया के प्रतिनिधियों ने (जिनका नेतृत्व बीजेंटाइन सम्राट जॉन अष्टम पलायोलोगोस और कॉन्स्टैन्टिनोपल के पितृसत्ताध्यक्ष कर रहे थे) रोमन कैथोलिक कलीसिया के साथ संघ का एक औपचारिक अधिनियम हस्ताक्षरित किया। उन्होंने रोम के पोप को समस्त कलीसिया का प्रधान (सर्वोच्च प्राधिकारी) मानने पर सहमति व्यक्त की।

क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसे मसीह कलीसिया का सिर है; और वही देह का उद्धारकर्ता है। इफिसियों 5:23।

नीकियाई धर्मस्वीकारोक्ति

सम्राट और पितृपुरोहित ने नाइसिन पंथवचन में “फ़िलिओक्वे उपवाक्य” को स्वीकार किया, जो नाइसिन पंथवचन में एक जोड़ा गया परिशिष्ट था, और जिसके अनुसार पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से प्रवाहित होता है। नाइसिन पंथवचन कैथोलिक विश्वास के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से प्रयुक्त घोषणाओं में से एक है। नाइसिन पंथवचन कैथोलिक विश्वास की मूल मान्यताओं का एक औपचारिक सार है। इसे मूल रूप से इस सत्य की रक्षा के लिए लिखा गया था कि यीशु मसीह कौन हैं। सन् 325 में एक बड़ा विवाद उत्पन्न हुआ, क्योंकि एरियस नामक एक याजक ने यह शिक्षा दी कि यीशु परमेश्वर पिता द्वारा सृजित किए गए थे और पूर्णतः परमेश्वर नहीं थे।

सम्राट कॉन्स्टैन्टाइन ने इस विषय का निपटारा करने के लिए नाइसिया की प्रथम महासभा बुलाई। उस महासभा ने दृढ़तापूर्वक यह प्रतिपादित किया कि यीशु पूर्णतः परमेश्वर हैं, और पिता के “उसी तत्त्व” के हैं। बाद में सन् 381 में कॉन्स्टैन्टिनोपल की महासभा में इस विश्वास-पत्र का विस्तार किया गया। इस बिंदु पर यह ध्यान देने योग्य है कि नाइसियाई विश्वास-पत्र कॉन्स्टैन्टाइन प्रथम के इतिहास में स्थापित किया गया था, और यह अंतिम कॉन्स्टैन्टाइन के लिए भी एक विषय होने वाला था, जो कॉन्स्टैन्टाइन एकादश था, और जो पूर्वी बीजान्टिन साम्राज्य का अंतिम सम्राट था। महान कॉन्स्टैन्टाइन, जो प्रथम था, बाइबल की भविष्यवाणी में बार-बार एक विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह पूर्वी साम्राज्य के आरंभ में शासक है और इसलिए पूर्वी साम्राज्य के अंत में होने वाले शासक का प्रतिरूप ठहरता है। यह तथ्य कि नाइसियाई विश्वास-पत्र आरंभिक और अंतिम—दोनों इतिहासों का एक तत्त्व है, भविष्यवाणी के विद्यार्थी द्वारा अवश्य ध्यान में रखा जाना चाहिए, यदि वह अल्फ़ा और ओमेगा के सिद्धांत को समझता है।

381 में, नाइसिन पंथ-विधान को पर्गोटरी के सिद्धान्त तथा यूखरिस्ट के सिद्धान्त के साथ अद्यतन किया गया; साथ ही, यूखरिस्ट के लिए बिना खमीर की रोटी के उपयोग को स्वीकार किया गया, जो एक लैटिन प्रथा थी। 381 के इस पंथ-विधान ने मूल पाप और परलोक के विषय में कैथोलिक समझ को भी स्वीकार किया। इसका समापन इस प्रमुख पंक्ति के साथ हुआ: “हम यह भी परिभाषित करते हैं कि पवित्र प्रेरितिक आसन और रोमी परमधर्माध्यक्ष समस्त संसार पर प्रधानता रखता है और मसीह का सच्चा प्रतिनिधि है।”

फ़्लोरेंस की महासभा में 6 जुलाई 1439 को एक और अद्यतन संस्करण पर हस्ताक्षर किए गए, जो 1453 में ओटोमन तुर्कों के हाथों कॉन्स्टैन्टिनोपल के पतन से 14 वर्ष पूर्व था। यह संघ भारी राजनीतिक दबाव के अधीन हस्ताक्षरित किया गया था। बीजान्टिन साम्राज्य आगे बढ़ते हुए ओटोमनों के विरुद्ध पश्चिम से सैन्य सहायता पाने के लिए अत्यन्त व्याकुल था। जब यूनानी प्रतिनिधि अपने घर लौटे, तब पूर्व में अधिकांश पादरियों, भिक्षुओं, और सामान्य लोगों द्वारा इस समझौते का प्रबल विरोध किया गया। जिन अधिकांश बिशपों ने इस पर हस्ताक्षर किए थे, उन्होंने बाद में अपना समर्थन वापस ले लिया। यह संघ कभी पूर्ण रूप से कार्यान्वित नहीं किया गया और आगामी वर्षों में पूर्वी रूढ़िवादी कलीसिया द्वारा औपचारिक रूप से अस्वीकार कर दिया गया। 1453 में कॉन्स्टैन्टिनोपल के पतन तक, यह संघ पहले ही व्यावहारिक रूप से विघटित हो चुका था। इतिहासकार प्रायः इसका वर्णन एक ऐसे राजनीतिक संघ के रूप में करते हैं, जो गहरे धर्मशास्त्रीय, सांस्कृतिक, और जन-आधारित प्रतिरोध के कारण विफल हो गया।

325 ईस्वी की नाइसिया की प्रथम महासभा में नाइसियन धर्मसिद्धांत को अपनाया गया। यह 330 ईस्वी से पाँच वर्ष पहले का चिन्ह है, जब दानिय्येल 11:24 के 360 वर्ष, जिन्हें एक “समय” के रूप में निरूपित किया गया है, समाप्त हुए।

वह शान्तिपूर्वक प्रान्त के सबसे उपजाऊ स्थानों में भी प्रवेश करेगा; और वह वह कार्य करेगा जो न उसके पितरों ने किया, और न उसके पितरों के पितरों ने; वह उनके बीच लूट, माल, और धन बिखेर देगा; वरन् वह कुछ समय तक गढ़ों के विरुद्ध अपनी युक्तियाँ रचेगा। दानिय्येल 11:24.

ईसा-पूर्व 31वाँ वर्ष और 330—दोनों ही दानिय्येल ग्यारह के सत्ताईसवें और उनतीसवें पदों के “नियत समय” को चिह्नित करते हैं।

और उन दोनों राजाओं के मन अनिष्ट करने पर लगे रहेंगे, और वे एक ही मेज़ पर बैठकर झूठ बोलेंगे; परन्तु वह सफल न होगा, क्योंकि अन्त अभी भी नियत समय पर ही होगा। ... नियत समय पर वह लौटेगा और दक्षिण की ओर आएगा; परन्तु इस बार वैसा न होगा जैसा पहले हुआ था, और न वैसा जैसा बाद में होगा। दानियेल 11:27, 29.

पूर्वी रोम की भविष्यसूचक रेखा का आरम्भ (330) और अन्त (1449-1453) प्रथम और अंतिम सम्राट कॉन्स्टैन्टाइन द्वारा निरूपित होता है। पूर्वी रोम की भविष्यसूचक रेखा का अल्फा और ओमेगा, जिसे बीजान्टिन साम्राज्य कहा जाता है, तीन सौ साठ वर्षों वाले साम्राज्यवादी रोम के अन्त से संबद्ध है, जिसने 31 ईसा पूर्व में एक्टियम के युद्ध से लेकर 330 ईस्वी तक, और फिर आगे 1453 तक, सर्वोच्च रूप से शासन किया। 31 ईसा पूर्व में एक्टियम के युद्ध से पहले मार्क एंटनी और ऑगस्टस सीज़र ने एक ही मेज़ पर असत्य बातें कहीं, जो सफल न हुईं। 330 ईस्वी से पहले, 325 में, नाइसियन पंथस्वीकार को अंगीकृत किया गया। 1453 से पहले उसी नाइसियन पंथस्वीकार के अद्यतन रूप को अंगीकृत किया गया। 31 ईसा पूर्व से पहले दो राजनीतिक व्यक्तियों ने एक ही मेज़ पर असत्य कहा था। 325 में आत्मिक असत्य एक ही मेज़ पर कहा गया। वे दो साक्षी उन राजनीतिक और आत्मिक असत्यों की पहचान कराते हैं, जिन्हें 1439 में फ्लोरेंस की परिषद में अंगीकृत किया गया। उस अद्यतन नाइसियन पंथस्वीकार को डिक्री ऑफ यूनियन कहा गया।

“एक ही मेज़ पर झूठ” का पहला मार्गचिह्न 31 ईसा-पूर्व से पहले आया, और वह मूर्तिपूजक रोम के दो राजनीतिक गुटों के बीच था। उन झूठों के लिए नियुक्त समय 31 ईसा-पूर्व था, और उसमें अगस्तस सम्मिलित था, जो मिस्र का प्रतिनिधित्व करने वाले एक पुरुष और एक स्त्री के महासंघ के विरुद्ध रोम का प्रतीक था। झूठों का दूसरा समूह 325 में था, और नियुक्त समय 330 था। झूठों का तीसरा समूह 1439 में था, और नियुक्त समय 1449-1453 था। 1439 में मेज़ पर बैठे हुए जन पश्चिमी और पूर्वी रोम का प्रतिनिधित्व करते थे, जहाँ पूर्वी रोम एक धार्मिक तर्क से सहमत होकर एक राजनीतिक लक्ष्य की खोज कर रहा था। 31 ईसा-पूर्व, उसके बाद 330, और फिर 1453, रोम की रेखा के त्रिविध अनुप्रयोग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मार्क एंटनी और क्लियोपात्रा के गठबंधन का राजनीतिक संकट, 325 में एरियनवाद के विधर्म के आध्यात्मिक संकट का पूर्वरूप था, और वह आगे चलकर 1439 में इस्लामी तुर्कों के राजनीतिक तथा धार्मिक संकट का पूर्वरूप बना।

नाइसिन धर्मसिद्धान्त की शिक्षाएँ असत्य हैं, और उनमें सत्य का कोई अंश नहीं है। 6 जुलाई 1439 को फ्लोरेंस की परिषद् में जिस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए गए, उसे “डिक्री ऑफ यूनियन” कहा गया, और वह उन्हीं असत्यों तथा उनसे भी अधिक का प्रतिनिधित्व करता था। जब 1439 में प्रतिनिधि कॉन्स्टैन्टिनोपल लौटे, तो उनका सामना क्रोध और विश्वासघात के आरोपों से हुआ। यह कहावत चारों ओर फैल गई: “पोप के माइटर से तुर्की पगड़ी बेहतर है।”

संघ पर मुख्यतः इसलिए हस्ताक्षर किए गए, क्योंकि बीजान्टिन सम्राट को ओटोमनों के विरुद्ध पश्चिमी सैन्य सहायता की अत्यन्त आवश्यकता थी। जब यह स्पष्ट हो गया कि बहुत कम (या बिल्कुल भी नहीं) सैन्य सहायता आने वाली थी, तो उस संघ के लिए समर्थन समाप्त हो गया। 1450-1451 में, कई पूर्वी धर्मसभाओं ने उस संघ को अस्वीकार कर दिया, और 1453 में कॉन्स्टैन्टिनोपल के पतन के बाद, उस संघ को पूर्णतः त्याग दिया गया। फ्लोरेंस के संघ-आदेश का अंतिम परिणाम पूर्वी रूढ़िवादी कलीसिया द्वारा एक विफल और अस्वीकृत परिषद् के रूप में माना जाता है। इसे वैध नहीं माना जाता। तथापि, रोमन कैथोलिक कलीसिया अभी भी इसे एक वैध सार्वभौमिक परिषद् मानती है।

हम यह समझने के लिए तर्क-क्रम स्थापित कर रहे हैं कि दूसरे हाय के भविष्यवाणी-संबंधी लक्षण तीसरे हाय के इतिहास में किस प्रकार पुनरावृत्त होते हैं। पहले हाय की एक सौ पचास वर्ष की भविष्यवाणी 27 जुलाई, 1299 को आरम्भ हुई और 27 जुलाई, 1449 को समाप्त हुई।

कॉन्स्टैन्टिन इलेवन पलायोलोगोस का जन्म 1404 में हुआ और उसने जनवरी 1449 से 29 मई 1453 तक शासन किया। वह पूर्वी रोमन (बाइज़ेंटाइन) साम्राज्य का अंतिम सम्राट था, जो 1,100 से अधिक वर्षों तक बना रहा था। 1453 में उस्मानी घेराबंदी के दौरान उसने लगभग 7,000 से 8,000 रक्षकों के साथ मेहमेद द्वितीय की 80,000 से अधिक की सेना के विरुद्ध कॉन्स्टैन्टिनोपल की रक्षा का साहसपूर्वक नेतृत्व किया। 29 मई 1453 को, जब कॉन्स्टैन्टिनोपल अंततः पतित हो गया, वह नगर-प्राचीरों पर युद्ध करते हुए मारा गया। उसके शरीर की कभी निर्णायक रूप से पहचान नहीं हो सकी। उसकी मृत्यु ने रोमन साम्राज्य का अंत चिह्नित किया (उस साम्राज्य की अंतिम प्रत्यक्ष निरंतरता का, जिसकी स्थापना 27 ईसा पूर्व में ऑगस्टस ने की थी)।

उसे यूनानी इतिहास और रूढ़िवादी परंपरा में एक वीरतापूर्ण व्यक्तित्व के रूप में स्मरण किया जाता है—किंवदंती में उसे प्रायः “संगमरमर का सम्राट” कहा जाता है (यह विश्वास कि वह एक दिन कॉन्स्टैन्टिनोपल को बचाने के लिए लौटेगा)।

जॉन अष्टम पलायोलोगोस (1392-1448) अंतिम से पूर्ववर्ती बाइज़ेंटाइन सम्राट थे, जिन्होंने 1425-1448 तक शासन किया। वे सम्राट मैनुअल द्वितीय पलायोलोगोस के ज्येष्ठ पुत्र और कॉन्स्टैन्टाइन एकादश के बड़े भाई थे। जॉन अष्टम ने अपने शासनकाल का अधिकांश भाग ओटोमनों से मरणासन्न बाइज़ेंटाइन साम्राज्य को बचाने के लिए व्याकुल प्रयास करते हुए बिताया। 1439 में वे स्वयं इटली गए और फ्लोरेंस की परिषद् की अध्यक्षता की, जहाँ उन्होंने और पूर्वी ऑर्थोडॉक्स प्रतिनिधिमंडल ने अस्थायी रूप से रोमन कैथोलिक कलीसिया के साथ पुनः एक होने तथा पोप को कलीसिया के प्रधान के रूप में स्वीकार करने पर सहमति व्यक्त की। कॉन्स्टैन्टाइन महान ने भी नाइसिया की परिषद् की अध्यक्षता की थी। जॉन अष्टम को आशा थी कि पोपसत्ता के साथ यह एकता उन्हें तुर्कों के विरुद्ध पश्चिमी सैन्य सहायता दिलाएगी, परंतु कॉन्स्टैन्टिनोपल में यह एकता अत्यंत अलोकप्रिय थी और अंततः असफल हो गई। जॉन अष्टम की मृत्यु 1448 में (स्वाभाविक कारणों से) हुई, कॉन्स्टैन्टिनोपल के 1453 में पतन से केवल पाँच वर्ष पहले। इसके बाद उनके भाई कॉन्स्टैन्टाइन एकादश सम्राट बने और नगर की रक्षा करते हुए मारे गए।

जब 1448 में जॉन अष्टम की मृत्यु हुई, तब उसके भाई कॉन्स्टैन्टाइन एकादश को उत्तराधिकारी चुना गया। 1448 तक बाइज़ैन्टिन साम्राज्य एक अत्यन्त छोटा आश्रित राज्य रह गया था, और कॉन्स्टैन्टिनोपल के सिंहासन पर कौन बैठेगा, इस पर उस्मानियों का पर्याप्त प्रभाव था। 27 जुलाई, 1449 को, बाइज़ैन्टिन साम्राज्य के अंतिम वर्षों में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना घटी। बाइज़ैन्टिन सम्राट जॉन अष्टम पलायोलोगोस की मृत्यु 1448 में ही पहले हो चुकी थी। उसके भाई, कॉन्स्टैन्टाइन एकादश पलायोलोगोस (अंतिम सम्राट), को कॉन्स्टैन्टिनोपल में सम्राट घोषित किया गया। तथापि, कॉन्स्टैन्टाइन एकादश के औपचारिक रूप से सिंहासनारूढ़ होने से पहले, उसने उस्मानी सुल्तान (मुराद द्वितीय) के पास राजदूत भेजे और शासन करने की अनुमति माँगी। सुल्तान ने वह अनुमति प्रदान की, और तभी कॉन्स्टैन्टाइन एकादश को औपचारिक रूप से राज्याभिषिक्त किया गया और सम्राट के रूप में मान्यता दी गई। इस कृत्य को बाइज़ैन्टिन स्वतंत्रता के स्वैच्छिक समर्पण के रूप में देखा गया। पहली बार, किसी बाइज़ैन्टिन सम्राट ने खुले रूप से स्वीकार किया कि वह केवल उस्मानी तुर्कों की अनुमति से ही शासन करता है। केवल चार वर्ष बाद, 1453 में, कॉन्स्टैन्टिनोपल उस्मानियों के हाथों गिर गया।

27 जुलाई, 1449 के पश्चात् तीन सौ इक्यान्वे वर्ष और पंद्रह दिन बाद, 11 अगस्त, 1840 को, तुर्कों ने चार महान यूरोपीय शक्तियों के अधीन होकर मिस्र से संरक्षण माँगा; इस प्रकार उन्होंने एक घड़ी, एक दिन, एक महीने और एक वर्ष की भविष्यद्वाणी को पूरा किया। अब हम उस तर्क को स्थापित कर चुके हैं जिसके द्वारा आसन्न संडे लॉ पर पहली और दूसरी विपत्ति को लागू किया जाए। एक सौ चवालीस हज़ार के प्रतीक के रूप में पतरस तीसरे स्वर्गदूत की गति का प्रतिनिधित्व करता है और विलियम मिलर पहले और दूसरे स्वर्गदूतों की गति का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों गतियाँ “कुंजियों” के साथ संबद्ध हैं।

और मैं दाऊद के घराने की कुंजी उसके कंधे पर रखूँगा; वह खोलेगा, और कोई बन्द न करेगा; और वह बन्द करेगा, और कोई न खोलेगा। यशायाह 22:22।

और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। और मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बँधा जाएगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खोला जाएगा। मत्ती 16:18, 19.

हम अगले लेख में नीनवे की लड़ाई पर उस “कुंजी” के रूप में विचार करेंगे, जो न केवल अथाह गड्डे को खोलती है, बल्कि उस भविष्यद्वाणी संबंधी कुंजी के रूप में भी, जो दानियेल ग्यारह की संपूर्ण साक्ष्य-श्रृंखला को सिद्ध क्रम में स्थापित करती है। मिलर के स्वप्न में संदूकची से लगी हुई “कुंजी” मिलर की बाइबल-अध्ययन की पद्धति थी। मिलरवादी इतिहास के प्रमाण-पाठों का प्रयोग, तीसरे स्वर्गदूत के इतिहास में “पंक्ति पर पंक्ति” के साथ संयुक्त होकर, वह कुंजी है जो प्रकाशितवाक्य नौ की कुंजी को पद चालीस के बाहरी संदेश के गुप्त इतिहास को खोलने और उसे क्रम में स्थापित करने योग्य बनाती है।

हम अगले लेख में अपने विचार-विमर्श को आगे बढ़ाएँगे।

“नबी के लिए पहिए के भीतर पहिया, तथा उनसे संबद्ध जीवित प्राणियों के दर्शन, सब कुछ जटिल और अव्याख्येय प्रतीत हुए। परन्तु पहियों के बीच अनन्त बुद्धि का हाथ दिखाई देता है, और उसके कार्य का परिणाम पूर्ण व्यवस्था होता है। प्रत्येक पहिया प्रत्येक दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य में कार्य करता है।” टेस्टिमोनिज़ टू मिनिस्टर्स, 214.